विद्याश्री न्यास : गतिविधि 2017

कथेतर हिन्दी गद्य : परम्परा और प्रयोग पर केन्द्रित
दो दिवसीय अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी एवं भारतीय लेखक-शिविर

(वाराणसी, 13–14 जनवरी, 2017)

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त आयोजन भारतीय लेखक शिविर एवं अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी **'कथेतर हिन्दी गद्य : परम्परा और प्रयोग'(13–14 जनवरी, 2017)** का उद्घाटन म0प्र0 के पूर्व राज्यपाल श्री **माता प्रसाद**, 'इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक' के कुलपति **प्रो0 टी0 वी0 कट्टीमनी,** सुश्री **तातियाना,** श्री **श्याम सुन्दर दुबे**, श्री **अरुणेश नीरन**, श्री **दयानिधि मिश्र** के सामूहिक दीप–प्रज्ज्वलन, अखिलेश दुबे के वैदिक स्तवन एवं डॉ0 उमापति दीक्षित के पौराणिक मंगलाचरण के साथ हुआ। मंचस्थ अतिथियों ने संभावना कला मंच द्वारा संयोजित विद्याश्री न्यास की चित्रवीथि एवं पोस्टर–प्रदर्शिनी के उद्घाटन के साथ ही **'धर्म की अवधारणा : परम्परा और प्रासंगिकता',** तथा पंडितजी की पुनर्प्रकाशित पुस्तकें **'छितवन की छाँह'** और **'कदम की फूली डाल'** का लोकार्पण भी किया। अरुणेश नीरन ने सबके स्वागत के साथ ही विषय की प्रस्तावना भी प्रस्तुत की।

बीज वक्तव्य में श्री **श्याम सुन्दर दुबे** ने गद्य की अस्मिता पर बात की और कहा कि गद्य ने मनुष्य के विकास की अनंत संभावना एवं दिशाएँ दी हैं, संस्कृति के विभिन्न चिंतन को सामने लाने में उसने समर्थ भूमिका निभाई है। जर्मनी से आयी **सुश्री तातियाना** ने भारतीय संस्कृति एवं समाज के वैशिष्ट्य को रेखांकित किया। माननीय **माता प्रसाद जी** ने कथेतर हिन्दी साहित्य में दलित चिंतन की पृष्ठभूमि पर प्रकाश डाला। देव के एक पद को उद्धृत करते हुए उन्होंने बीज रूप में दलित विमर्श की बात की। प्रो0 **टी0 वी0 कट्टिमनी** ने अध्यक्षीय वक्तव्य में पंडित जी के लेखन–चिंतन की अनेक विशेषताओं को रेखांकित करते हुए उसे आज के संदर्भ में और भी प्रासांगिक बताया। उन्होंने विद्यानिवास मिश्र जी पर एक अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठी इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक में कराने का आह्वाहन करते हुए सहयोग की मांग की। धन्यवाद ज्ञापन **डॉ0 दयानिधि मिश्र** ने तथा संयोजन श्री **प्रकाश उदय** ने किया।

प्रथम अकादमिक सत्र **'कथेतर हिन्दी गद्य : विधाएँ और संभावनाएँ'** के अन्तर्गत श्रीमती **विद्या बिन्दु सिंह** ने संस्मरण 'मैं और मेरा मन' के माध्यम से बताया कि इसमें आत्मकथा, डायरी, पत्र–लेखन, संस्मरण का संगुंफन है। इसके जरिए नागर जी का जो व्यक्तित्व उभरता है वह अपने शिष्यों के गौरव को अपना गौरव मानने वाला है, यादों के गलियारों से निकलते ही गलियारों की यादों में खो जाने वाला है। श्री **हरीश रावत** ने साक्षात्कार पर बोलते हुए बताया कि यह विधा रचना एवं पाठक के बीच के द्वन्द्वको मिटाती है एवं रचना के मूल्यों को समझने में पाठक की दृष्टि का विस्तार करती है। प्रो0 **राजीव रंजन झा** ने 'लक्ष्मीपुरा', 'ऋण जल, धन जल' जैसे रिपोतार्जों के माध्यम से इस विधा की संरचना पर भी विचार व्यक्त किया और कहा कि रिपोर्ट में जब 'कथा' मिलती है तब रेणु के यहाँ 'रिपोतार्ज' की सृष्टि होती है। श्रीमती **सुभद्रा राठौर** ने बताया कि किसी भी यायावर की मुक्त अभिव्यक्ति ही यात्रा–वृत्तान्त है और एक यात्रा वृत्तान्तकार के पास कई जगहों की कई तरह की अनुभूतियाँ होती हैं, अतः वह साहित्य की अन्य विधाओं से अधिक महत्त्वपूर्ण है। इसमें भूगोल, इतिहास, अर्थशास्त्र, मनोविज्ञान सभी कुछ मिलता है। श्री **राम परिहार** ने एक ओर 'कवि वचन सुधा' हरिश्चन्द्र मैगजीन, हिन्दी प्रदीप में छपे निबंधों के माध्यम से यह बताया कि इसमें सामाजिक जागृति की अनुगूंजे हैं, दूसरी ओर ललित निबंधों की संकल्पना को स्पष्ट करते हुए कहा कि यह शाश्वत मूल्यों की विधा है। **भारती गोरे** ने 'जीवनी साहित्य' के विस्तृत आयामों का उल्लेख करते हुए, उसकी चुनौतियों पर प्रकाश डाला, विभिन्न आलोचकों के वक्तव्यों को भी रेखांकित किया। श्री **कृपाशंकर चौबे** ने 'आत्मकथा' के स्वरूप विश्लेषण के साथ ही भारतेन्दु युग से लेकर दलित आत्मकथाओं तक की यात्रा को अपने व्याख्यान के केन्द्र में रखा और 'एक अनपढ़ी कहानी' को विशेषतः रेखांकित किया। **भारती सिंह** ने निराला से संबंधित अपने 'साक्षात्कार' पर बोलते हुए उसके अनुभवों को साझा किया। अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ0 **राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय** ने कहा कि पाठक के मन की बात जो रचनाकार करता है, उसकी रचनाएँ कालजयी हो जाती हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि पाठक भी एक रचनाकार होता है। इस सत्र का संचालन प्रो0 सत्यदेव त्रिपाठी ने किया और बीच–बीच में अपनी टिप्पणियों से विमर्श को एक गरिमा प्रदान की।

द्वितीय अकादमिक सत्र **'कथेतर हिन्दी गद्य की आलोचना : प्रयोजन और निकष'** में डॉ0 **रमेश ऋतम्भर** ने आत्मकथाओं, पत्रों एवं डायरी आदि पर बोलते हुए कहा कि पत्र या डायरी किसी भी रचनाकार की

उठा लीजिए, उसके लेखन का संघर्ष उभर कर सामने आ जाता है। डॉ0 **दिलीप सिंह** ने 'निज भाषा की उन्नति को उन्नति का मूल' मानते हुए भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, हजारी प्रसाद द्विवेदी आदि के चिंतन की लम्बी वैचारिक प्रक्रिया पर प्रकाश डाला और महावीर प्रसाद द्विवेदी का उदाहरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि भारतीय भाषाओं में जो कुछ श्रेष्ठ है, जो हमारी भाषा के विकास में सहायक है, उसका अनुवाद आवश्यक है। **जय प्रकाश** ने 'कथेतर गद्य की सर्जनात्मकता और आलोचना की वर्ण व्यवस्था' नामक अपने आलेख का वाचन किया, जिसमें आदिकाल से लेकर आज तक की आलोचनात्मक दृष्टि स्पष्ट हुई। श्री **रेवती रमण** ने बतलाया कि 80 (अस्सी) के दौर के पहले की रचनाओं में पठनीय आलोचना दिखलाई पड़ती है और इसके बाद की आलोचना में तमाम तरह के अन्तर्विषयी अनुशासनों की जानकारी, इतनी समाहित है कि साहित्य के मूल–भाव ही उससे विलग हो जाते हैं। प्रो0 **अनिल राय** ने वैचारिक एवं सृजनात्मक गद्य के द्वन्द्वात्मक चिंतन की चर्चा की, और इस चिंतन की प्रक्रिया को समझने एवं विकसित करने पर जोर दिया। यह भी बताया कि आनुपातिक तत्त्वों के निर्धारण के आधार पर ही कथेतर गद्य की विधा का स्वभाव निर्धारित होता है। इस सत्र की अध्यक्षता कर रहे प्रो0 **सूर्यप्रसाद दीक्षित** ने कथेतर गद्य साहित्य के अन्तःसम्बन्धों की चर्चा करते हुए उसके विविध विचारों के संघनात्मक जुड़ाव को स्पष्ट किया। उन्होंने बतलाया कि सृजन और चिंतन को अलगा पाना मुश्किल है और कभी सृजन को चिंतन व्याख्यायित करता है तो कहीं चिंतन को सृजन। इस सत्र का सफल संचालन कुछ सूत्रपरक टिप्पणियों के साथ प्रो0 वशिष्ठ अनूप ने किया।

कवि गोष्ठी में करुणा सिंह, अशोक सिंह घायल, विद्या बिन्दु सिंह, रमा सिंह, डॉ0 सपना सिंह, योगेन्द्र नारायन योगी, सरोज सिंह, डॉ0 रमेश ऋतम्भर, सिद्धनाथ शर्मा, अलकबीर, धमेन्द्र साहिल, गौतम अरोड़ा, परमानन्द, प्रकाश उदय, प्रो0 वशिष्ट अनूप, वासुदेव, बलभद्र, बृजेन्द्र पाण्डेय, श्री सुरेन्द्र वाजपेयी, प्रो0 बलिराज पाण्डेय, इर्शाद अजीज, इशरत सुल्ताना, डॉ0 राम अवतार पाण्डेय ने प्रभावी काव्यपाठ किया। इस कवि गोष्ठी की अध्यक्षता **प्रो0 हरेराम द्विवेदी** ने की, संचालन डॉ0 **जितेन्द्र नाथ मिश्र** ने किया।

दूसरे दिन की शुरुआत सम्मान समारोह के साथ केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की पत्रिका **'गवेषणा'** के विद्यानिवास मिश्र पर केन्द्रित विशेषांक के लोकार्पण से हुई। श्री **श्याम सुन्दर दुबे** को विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान, **आनंद संधिदूत** को लोक कवि सम्मान, **अजय कुमार सिंह** को राधिका देवी लोककला सम्मान एवं **शिव कुमार पराग** को श्रीकृष्ण तिवारी स्मृति गीतकार सम्मान समारोहपूर्वक प्रदान किया गया। स्वीकृत वक्तव्य के साथ श्री **शिव कुमार पराग** ने 'तिनका–तिनका जुटा के लाती रही/जिन्दगी घोसला बनाती रही।/पाँव मेरे फिसल गये होते/कविता ही मुझे बचाती रही... और श्री **आनदं संधिदूत** ने अपनी **'ओझइती'** कविता प्रस्तुत की। **अजय कुमार सिंह** लोक जीवन की चर्चा करते हुए बताया कि लोककलाएँ लोक जीवन के विभिन्न आयामों को प्रदर्शित करती हैं। श्री **श्याम सुन्दर दुबे** ने कहा कि संस्कृति का जो अभिमान हमें है, वह हमारे गाँव में ही सुरक्षित है। स्मृति संवाद में प्रो0 **श्रद्धानंद** ने कहा कि 1975 से लेकर आज तक कभी मुझे ऐसा नहीं लगा कि पंडित जी हमारे साथ नहीं हैं, यह जरूर है कि जैसा वे डाटते थे, दुर्भाग्य से वैसी डांट अब कहीं नहीं मिलती। प्रो0 **चितरंजन मिश्र** ने कहा कि भारत में कोई विद्यानिवास मिश्र जैसा साहित्यकार नहीं दिखाई पड़ता, जिसने भारतीय संस्कृति का गहरा परिष्कार किया हो। लोग मानते हैं कि अर्थव्यवस्था बदलती है तो देश बदलता है, लेकिन पंडित जी मानते थे कि जब भाव बदलता है तब देश बदलता है। वह जीवन को खण्ड–खण्ड करके नहीं, अखण्ड दृष्टि से देखते थे। फ्रान्स से आये विद्वान **निकोलस बोयम** ने भारतीय संस्कृति दर्शन, संगीत एवं कला की चर्चा की और विलियम जोन्स एवं मैक्समूलर के योगदान की याद दिलायी। उनके व्याख्यान का केन्द्र यूरोप के अलादे रेहनू रहे, जो भारतीय संस्कृति से बहुत प्रभावित थे। ब्रिटेन से आये **तेजेन्द्र शर्मा** ने 1966 के काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दू–मुस्लिम मिलकर बाबा विश्वनाथ का प्रसाद खाते थे– की चर्चा के साथ अपने व्याख्यान की शुरुआत की। उन्होंने कहा जिस तरह से पश्चिम में साहित्यकारों को हीरो बना दिया गया, उसी तरह से भारत में लेखकों एवं रचनाकारों को 'रोल माडल' बनाने पर जोर देना चाहिए। उन्होंने साहित्य सेवा के लिए भारतीय रचनाकारों के साथ ही एक प्रवासी रचनाकार को भी पुरस्कृत करने की बात कही। प्रो0 **अच्युतानंद मिश्र** ने विद्यानिवास मिश्र को स्मरण करते हुए, उनके नव भारत टाइम्स से जुड़े अनेक प्रसंगों को याद किया और उनकी दृढ़ता को भी रेखांकित किया। इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो0 **नन्दकिशोर पाण्डेय** ने कथेतर गद्य के छूटे हुए पहलुओं की ओर ध्यान दिलाते हुए 'शब्द, भाषा, संस्कृति के सम्बन्धों की चर्चा की। उन्होंने बताया कि जिस शब्द में जितनी उत्पादकता होती है, वह उतनी दूर तक जाता है। शब्द का मान उसकी व्यंजना के आधार पर ठहरता है। इस सत्र का संचालन प्रो0 **राम सुधार सिंह** ने कुशलता के साथ किया।

तृतीय सत्र **'कथेतर हिन्दी गद्य का विकास और अवदान'** में डॉ0 **सत्येन्द्र शर्मा** ने महादेवी वर्मा के गीतों से लेकर पंडित जी के ललित निबंधों की चर्चा करते हुए कथेतर गद्य के संबंध में प्रगति–प्रयोगकालीन साहित्यिक चिंतन को व्यक्त किया। श्री **प्रभाकर मिश्र** ने विद्यानिवास मिश्र को स्मरण करते हुए कहा कि पंडित जी के निबंधों में एक परिवेश उभरता है, केवल ललित निबंधों के रूप में उन्हें याद करना, उनको सीमित करना है। प्रो0 **अवधेश प्रधान** ने बताया कि कविता, समाज, धर्म की चर्चा भारतेन्दु काल में अखबारों एवं सभाओं में लगातार चलती रहीं है। उन्होंने उस युग की वैचारिक प्रगतिशीलता को रेखांकित किया। प्रो0 **चन्द्रकला त्रिपाठी** ने बताया कि भारतेन्दु एवं महावीर प्रसाद द्विवेदी का जो समय है, उनके लेखन में उस समाज का इतिहास बोध समाहित है, समय के अन्तर्विरोध उसमें दर्ज हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य की सर्जना को ज्ञानात्मक सर्जना से जोड़ रहे थे। इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में प्रो0 **अनंत मिश्र** कहा कि हमेशा धारा को समझने के लिए धारा के उलट चलना पड़ता है। उन्होंने चिंता व्यक्त की कि समकालीन समय में मनुष्यता का घोर पतन हो गया है। लोग सत्य से बचने की चेष्टा कर रहे हैं। एक तरफ पंडित जी का साहित्य न पढ़े जाने की चिंता व्यक्त की वहीं दूसरी ओर कूड़े के बारे में लिखने के लिए कूड़ा हो जाना जरूरी नहीं है, का सन्देश दिया। इस सत्र का सफल संचालन सूत्रबद्ध टिप्पणियों के साथ प्रो0 **वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी** ने किया।

कार्यक्रम के समापन सत्र के पहले चयनित रचनाओं का पाठ किया गया। कहानी के क्षेत्र में **सपना सिंह** को पहला पुरस्कार प्राप्त हुआ। आलेख लेखन में प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमशः **पूजा यादव, संतोष कुमार** एवं डॉ0 अनुराधा को प्राप्त हुआ एवं कविता के क्षेत्र में प्रथम द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमशः **अनिल कुमार यादव, सुरभि श्रीवास्तव एवं प्रमोद कुमार** को दिया गया। समापन सत्र के प्रथम वक्ता के रूप में डॉ0 **सुशील कुमार पाण्डेय** ने लोक–भाषा एवं संस्कृति की चर्चा करते हुए कथेतर गद्य साहित्य पर अपने विचार व्यक्त किए। डॉ0 **वशिष्ठ मुनि ओझा** ने भाषा की कठिनता के शिकायती लोगों से कहा कि जो आता है वह कठिन नहीं होता, जो नहीं आता वही कठिन होता है। अतः हमें सीखने एवं जानने पर जोर देना चाहिए, न कि कठिन कह कर छोड़ देना चाहिए। प्रो0 **श्रीनिवास पाण्डेय** ने बताया कि पंडित जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने मानक स्थापित किया। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में **काशीनाथ सिंह** ने विद्यानिवास मिश्र का स्मरण करते हुए कहा कि मैंने जितना लिखने के मामले में अपने भाई से सीखा है, उससे कम पंडित जी से नहीं सीखा। संस्कृत व्याकरण के विषय में जो मुझे जानकारी मिली उसमें पंडित जी का बहुत बड़ा योगदान रहा। कार्यक्रम का संचालन बिजेन्द्र पाण्डेय ने और आभार–प्रदर्शन डॉ0 दयानिधि मिश्र ने किया।

पं. विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत कवि–गोष्ठी सम्पन्न

विद्याश्री न्यास एवं बौद्ध दर्शन विभाग सं.वि.वि. द्वारा सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में मंगलवार दि. 14 फरवरी को योग साधना कक्ष में पंडित विद्यानिवास मिश्र की पुण्यतिथि पर संस्कृत कवि गोष्ठी हुई। विद्वानों ने पंडित विद्यानिवास मिश्र को याद किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पूर्व प्रति कुलपति प्रो. शिवजी उपाध्याय थे।

कवि गोष्ठी में प्रो. गंगाधर पंडा, डॉ. लेखमणि त्रिपाठी, प्रो. शिवराम शर्मा, प्रो. धर्मदत्त चतुर्वेदी, प्रो. प्रभुनाथ द्विवेदी, प्रो. हरिप्रसाद अधिकारी, प्रो. हरप्रसाद दीक्षित, डॉ. राजनाथ त्रिपाठी, पवन कुमार शास्त्री, केशव पोखरेल ने अपनी रचनाएँ पढ़ीं। प्रो. शिवजी उपाध्याय ने पंडित विद्यानिवास मिश्र के सांस्कृतिक–साहित्यिक अवदान को याद किया। संस्कृत की सेवा के लिए प्रो. शिवजी उपाध्याय को **रामरुचि त्रिपाठी सम्मान** दिया गया। अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति प्रो. यदुनाथ दूबे ने संस्कृत भाषा और साहित्य के महत्त्व को रेखांकित किया। संचालन डॉ. चंद्रकांता राय, धन्यवाद ज्ञापन डॉ. दयानिधि मिश्र व अतिथियों का स्वागत प्रो. रमेश द्विवेदी ने किया।

'परंपरा और आधुनिकता के प्रतीक : पं. विद्यानिवास मिश्र'
24–25 मार्च, 2017
(भाषा विज्ञान विभाग, लुप्तप्राय भाषा केन्द्र, हिन्दी विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक एवं विद्याश्री न्यास का संयुक्त आयोजन)

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक में भाषाविज्ञान विभाग, लुप्तप्राय भाषा केन्द्र, हिन्दी विभाग एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'परंपरा और आधुनिकता के प्रतीक :

पं. विद्यानिवास मिश्र' पर केन्द्रित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी (24–25 मार्च 2017) में उद्घाटन वक्तव्य देते हुए मुख्य अतिथि प्रो. महेश्वर मिश्र ने बताया कि परंपरा और आधुनिकता पर गंभीर विमर्श की शुरुआत पं. विद्यानिवास मिश्र ने ही, इन दोनो प्रत्ययों को लेकर तमाम तरह के दिग्भ्रमों को परे करते हुए इनके वास्तविक एवं भारतीय निहितार्थों तक पहुँचाने–पहुँचाने के उद्देश्य से की थी। पंडित जी ने अपनी चिन्तन–यात्रा में ट्रेडिशन, मॉडर्निटी, रिलीजन आदि की पाश्चात्य अवधारणओं से परंपरा, आधुनिकता, धर्म आदि की भारतीय अवधारणाओं के पार्थक्य और वैशिष्ट्य को बहुधा और बहुविध निरूपित किया है। जीवन की तमाम आपाधापियों के बीच ही उनकी रचना–यात्रा भी चलती रही है और उसमें उन्होंने न तो कभी कोई समझौतावादी रुख अपनाया, न ही निजी जीवन की कड़वाहटों से उसे आक्रान्त होने दिया और न ही कभी अपने निन्दकों को पलटकर कोई प्रत्युत्तर देने की कोशिश की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कुलपति प्रो. टी.वी. कट्टीमनी ने पंडित जी के विपुल एवं वैविध्यपूर्ण साहित्यक अवदान, उसके विभिन्न आयामों को लक्ष्य करते हुए इस तरह के सारस्वत आयोजनों की निरन्तरता और उनमें विभिन्न विश्वविद्यालयों– महाविद्यालयों की सक्रिय सहभागिता की अपेक्षा बताई। इस जनजातीय विश्वविद्यालय में, भारत के सामान्यजन की तरफ से ही अपनी वैचारिकी को धार देने वाले पं. विद्यानिवास जी पर इस तरह की चर्चा शुरू हुई, इसे उन्होंने गौरवपूर्ण बताया।

इस उद्घाटन सत्र का शुभारंभ दीप–प्रज्ज्वलन, माँ सरस्वती एवं पंडितजी के चित्रों पर माल्यार्पण, विद्यार्थियों की वाणी–वंदना, स्वागतगान एवं डॉ. उमापति दीक्षित द्वारा प्रस्तुत मंगलाचरण से हुआ। विद्याश्री न्यास की तरफ से कुलपति श्री टी.वी. कट्टीमनी एवं संगोष्ठी के संयोजक प्रो. दिलीप सिंह को नारिकेल, उत्तरीय, पंचमाल, पंचपुस्तक, प्रतीक–चिह्न आदि से सम्मानित किया गया। स्वागत–भाषण के साथ ही बीज वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए प्रो. दिलीप सिंह ने कार्यक्रम की रूपरेखा और पं. विद्यानिवास मिश्र के कृतित्व के विभिन्न पक्षों की चर्चा की। विशिष्ट अतिथि प्रो. खेम सिंह डहेरिया, प्रो. आलोक श्रोत्रिय एवं डॉ. प्रमोद कुमार ने पंडितजी के निबंधकार, भाषावैज्ञानिक, आलोचक, पत्रकार, संपादक, चिन्तक आदि विभिन्न रूपों पर विभिन्न कोणों से अपनी बात रखी। धन्यवाद–ज्ञापन प्रो. प्रसन्न कुमार सामल ने किया।

संगोष्ठी के प्रथम अकादमिक सत्र **'पं. विद्यानिवास मिश्र : व्यक्तित्व एवं कृतित्व'** के अन्तर्गत **डॉ. बिजेन्द्र पाण्डेय** ने पंडित जी के विभिन्न निबंधों **'हमारी परम्परा और हम', 'भोर का आवाहन','हिन्दू होने का मतलब'** आदि के माध्यम से उनके व्यक्तिव–कृतित्व पर प्रकाश डाला। **प्रो. सत्यदेव त्रिपाठी** ने **'हिन्दी की शब्द सम्पदा'** को आधार बनाकर पंडित जी के विशाल वैविध्यपूर्ण अनुभव–क्षेत्र को रेखांकित करते हुए कृषक एवं ग्रामीण जीवन के व्यवहार से बाहर हुए जा रहे शब्दों को संरक्षित किये जाने पर बल दिया। उन्होंने बताया कि लोक को वही समझ सकता है जो लोक से जुड़ा हो। **डॉ. रविकेश मिश्र** ने पंडित जी के साथ के संस्मरणों के माध्यम से कहा कि लेखक का व्यक्तित्व ही उसके कृतित्व में विकास पाता है। उन्होंने बताया कि पंडित जी अपना मुख फेर लेने मात्र से अप्रिय–से–अप्रिय स्थिति से एक झटके से उबर पाने में समर्थ थे। उनके व्यक्तित्व को जकड़ने वाली ढेर सारी शृंखलाएँ थीं और पंडित जी ने उन सबको लिए–दिए जाने कितने–कितने लक्ष्यों को, अवरोधों को पार किया। **प्रो. त्रिभुवन नाथ शुक्ल** ने **'तमाल के झरोखे से'** के साक्ष्य पर अपनी बात रखते हुए बताया कि उनके निबंधों को पढ़ने पर मन भीग जाता है, आँख डबडबा जाती है, संवेदनहीन होते जाते इस समय में, इसीलिए पंडित जी का कृतित्व एक धरोहर की तरह है। **डॉ. उमापति दीक्षित** ने पंडित जी को अदम्य जिजीविषा का धनी बताते हुए उनसे निरन्तर सीखते रहने की बात कही। **डॉ. अरुणेश नीरन** ने इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि आधुनिकता जो प्रश्न खड़े करती है, उनका उत्तर परम्परा में ही मिल सकता है। पंडित जी ने निरन्तर नव्यतर होते रहने को ही अपनी परंपरा के रूप में रेखांकित किया। इसी क्रम में पंडित जी ने हिन्दी की जनपदीय भाषाओं की पारंपरिक शब्द–संपदा को आधुनिक हिन्दी की नव्यतर आकांक्षाओं की प्रतिपूर्ति में सहायक बताया। पंडित जी का व्यक्तित्व सिन्धु के समान था, जिसके विस्तार को नापा नहीं जा सकता, उसका अनुभव अवश्य किया जा सकता है।

द्वितीय अकादमिक सत्र **'परम्परा और आधुनिकता का समन्वय : ललित एवं वैचारिक निबंध का संदर्भ'** के अन्तर्गत **डॉ. राम प्रकाश कुशवाहा** ने उनके अनेक निबंधो के आधार पर बताया कि वे इनके माध्यम से भारतीयता के मर्म तक पहुँचने–पहुँचाने की कोशिश करते हैं। 'स्व' से 'पर' तक की यात्रा को ही पंडित जी भारतीयता का मूल चिंतन बताते थे। **डॉ. सुनील कुमार मानस** ने परम्परा, आधुनिकता, समन्वय, लालित्य, भाव–विचार आदि पर अपने विचारों को केन्द्रित करते हुए पंडित जी के स्वतंत्र चिंतन पर प्रकाश डाला। **प्रो. प्रभाकर मिश्र** ने परम्परा के शाश्वत मूल्य की चर्चा करते हुए आधुनिकता के साथ उसका सामंजस्य बैठाया और बताया कि आधुनिकता का अर्थ है अपने को पहचानना। **डॉ. आरती स्मित** ने **'वैचारिक निंबधों**

के झरोखे से पं. विद्यानिवास मिश्र : कितने परम्परावादी कितने आधुनिक' नामक अपने शोध–पत्र के जरिए पंडित जी के विभिन्न प्रदेयो की चर्चा की। **डॉ. उमेश प्रसाद सिंह** ने **'लोक'** की एक कहानी के माध्यम से पंडित जी के विषय में बताया कि उनका व्यक्तित्व कभी पलायनवादी नहीं रहा। अपनी जड़ों को वह अच्छी तरह से पहचानते थे और उसी के आधार पर परम्परा, संस्कृति एवं संस्कार का विस्तार करते थे। इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. अनंत मिश्र** ने कहा कि परम्परा और आधुनिकता बहु–परिभाषित शब्द हैं। परम्परा कई बार आधुनिक सन्दर्भो को सुन्दर बना देती है, धारा में बहना पशुता है जबकि धारा के विपरीत जाना ही मनुष्यता है।

पहले दिन के कार्यक्रम का समापन पंडित जी पर केन्द्रित वृत्तचित्र **'वागर्थ का वैभव'** के प्रदर्शन के साथ ही डॉ. विजेन्द्र पाण्डेय, डॉ. आरती स्मित, प्रो. अवधेश प्रधान, डॉ. आशुतोष सिंह, डॉ. रविकेश मिश्र, डॉ. सुनील कुमार मानस, रितेश कुमार वाजपेयी के कविता–पाठ से हुआ, जिसकी अध्यक्षता **प्रो. अनंत मिश्र** ने और संचालन **प्रकाश उदय** ने किया।

दूसरे दिन, तृतीय अकादमिक सत्र **'भाषा वैज्ञानिक एवं व्याकरणिक चिंतन का परम्परागत एवं आधुनिक सन्दर्भ'** के अन्तर्गत **डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'** ने अपना शोध–लेख **'भाषा वैज्ञानिक चिंतनः प्रयोजनमूलक हिन्दी'** का वाचन किया जिसमें परम्परा, आधुनिकता, भाषा, शैली आदि से सम्बन्धित पंडित जी के विचारों की चर्चा थी। **प्रकाश उदय** ने अपने आलेख **'भाषा को सोचना'** के माध्यम से पंडित जी की भाषा–सम्बन्धी चिंता, चिंतन और उसकी प्रासंगिकता के बहुविध और बहु–स्तरीय होने को रेखांकित किया। **प्रो. श्रदानंद** ने बताया कि जब भी भारतीय चिंतन की परम्परा एवं संस्कृति पर बात करेंगे तो हमे पंडित जी मशाल लिए हुए खड़े दिखलाई देंगे। उन्होंने वैचारिकी के क्षेत्र में कभी कोई समझौता नहीं किया। यह भी बताया कि वे शब्दों से खेलते थे और उनकी अनेक अर्थ–छवियों को हमारे सामने ला देते थे। **प्रो. रेनू सिंह** ने अपने आलेख **'विद्यानिवास मिश्र का वैचारिक परिवेश'** के माध्यम से बताया कि वे परम्परा को विवेक के साथ मूल्यांकित करते हुए आधुनिकता के आकांक्षी थे। **प्रो. दिलीप सिंह** ने भाषा एवं व्याकरण सबंधी उनके कार्यों का उल्लेख करते हुए बताया कि पंडित जी पर दक्षिण भारत में बहुत–से काम हुए हैं। पंडित जी कहा करते थे कि भाषा आत्मीयता निर्मित करने का साधन है। वह नया–पुराना सब पढ़ते थे, लेकिन गुनते अपने ढंग से थे। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि हमें समग्रता में उन्हें समझने की जरूरत है। इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. रामबख्श मिश्र** ने हिन्दी एवं अंग्रेजी के विद्वानों के विचारों को रखते हुए भाषा एवं व्याकरण संबंधी पंडित जी की चिंताओं से अवगत कराया और उनके अध्ययन–अध्यापन की उपयोगिता एवं आवश्यकता पर भी तर्कसंगत विचार रखे।

चतुर्थ एवं अंतिम अकादमिक सत्र **'भाषा, संस्कृति और भारतीयता के चिंतन विन्दु'** के अन्तर्गत **डॉ. बृजेन्द्र त्रिपाठी** ने कहा कि पंडित जी जहाँ रहते थे, वहाँ एक बड़ा परिवार आकार ले लेता था। कुछ सूक्ति वाक्यों जैसे **'धर्म सकर्मक है, अकर्मक भी', 'संस्कृति व्यापार है, कोई सिद्धवस्तु नही', 'परम्परा एक गत्यात्मक रूप है' और 'भाषा और संस्कृति एक दूसरे से गहरे रूप से जुड़े है'** के माध्यम से उन्होंने प्रस्तुत विषय पर अपनी बात रखी। **श्रीराम परिहार** ने पंडित जी की भाषा, संस्कृति पर चर्चा करते हुए इस बात पर गहरी चिंता जाहिर की कि उन्हें कोई समझ नहीं रहा है। न तो किसी के पास सनातनता का बोध है और न ही 'काल' का। ऐसे लोगों के लिए लोक और शास्त्र और उनके संबंध–परस्पर को समझना और भी कठिन हो जाता है। उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ काल चक्रीय अवधारणा के रूप में स्वीकार किया गया है। उन्होंने कहा कि पंडित जी ऐसे मणि हैं जिससे हमें हमेशा प्रकाश मिलाता रहेगा। **डॉ. प्रेमशीला शुक्ल** ने अपने आलेख **'भारतीय संस्कृति के चिंतन के बिन्दु'** का वाचन करते हुए भारतीय चिंतन की व्यापकता एवं उसे समझने–समझाने में पंडित जी के योगदान की चर्चा की। **डॉ. सुभद्रा राठौर** ने बताया कि हर रचनाकार की एक परम्परा होती है। पंडित जी की भी एक परम्परा है। इसी बात को उन्होंने पंडित जी के निबंधों के विविध उदाहरणों के माध्यम से स्पष्ट करने का प्रयास किया। साथ ही उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में खेमेबाजी व गुटबाजी से पैदा हुई बदमजगियों की भी चर्चा की। **श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** ने पंडित जी के कलापरक चिंतन पर प्रकाश डालते हुए बताया कि उनकी दृष्टि केवल रूप को ही नहीं देखती, रूप के पार भी देखती है। विभिन्न प्रकार के कलारूपों और चित्रों का उनके चिंतन पर गहरा प्रभाव पड़ा था। तमाम तरह की कला–रीतियों की चर्चा करते हुए उनकी कलागत रुचि एवं जानकारी को उन्होंने सप्रमाण प्रस्तुत किया। इस सत्र के अध्यक्षीय वक्तव्य में **प्रो. अवधेश प्रधान** ने कहा कि परम्परा पूर्ण से पूर्णतर होने की आकांक्षा है, लोक यही मानता है और प्रकृति का सहज जीवन ही लोक है। इस लोक और शास्त्र के चिंतन पर विभिन्न भारतीय चिंतकों के उदाहरणों

के जरिए उन्होंने अपनी बात स्पष्ट की और इसे लेकर गहरी चिंता व्यक्त की कि आजादी के बाद भारत ने विद्वानों का सम्मान करना सीखा ही नहीं।

समापन सत्र की शुरुआत मंचस्थ अतिथियों के सम्मान, **साध्वी मिश्रा** और **प्रगति जैन** के स्वागत गान एवं **डॉ. उमापति दीक्षित** द्वारा **'शिव तांडव'** स्तुति की प्रस्तुति के साथ हुई। **प्रो. दिलीप सिंह** ने स्वागत वक्तव्य में कार्यक्रम के विविध सत्रों की उपलब्धियों पर प्रकाश डालते हुए एक समीक्षात्मक विवरण प्रस्तुत किया और इसके आयोजन का श्रेय **प्रो. टी.वी. कट्टीमनी** तथा विद्याश्री न्यास को दिया और इसकी सफलता का श्रेय उन सभी सहभागियों को जिनके सहयोग ने कार्यक्रम को एक गौरवपूर्ण धरातल दिया। अपने इस वक्तव्य का समापन उन्होंने **'अच्छी भाषा ही अच्छी मनुष्यता है'** जैसे वाक्य से की। **प्रो. प्रभाकर मिश्र** एवं **प्रो. अवधेश प्रधान** ने कार्यक्रम संबंधी अपने अनुभव साझा किये, **प्रो. अनंत मिश्र** ने पंडित जी के मानवीय पक्ष की विराटता का बोध कराया और **श्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय** ने इसका सारा श्रेय पंडित जी के उत्सवधर्मी व्यक्तित्व को दिया, जिसका प्रभाव ही ऐसे कार्यक्रम को पूर्ण करा देता है। **प्रो. टी.वी. कट्टीमनी** ने पंडित जी की उत्सवधर्मिता के विषय में बताते हुए कहा कि पारिवारिक उत्सव केवल हँसी–खेल में ही नहीं होते बल्कि लड़ाई–झगड़े में भी होते हैं। इस तरह उत्सवधर्मिता को विस्तृत फलक प्रदान करते हुए उन्होंने कहा कि पंडित जी के उत्सवधर्मी व्यक्तित्व को 'नित्योत्सव' बनाने की जरूरत है। उनके इस उत्सव में भारतीय समाज के सभी लोगों का उत्सव जुड़ा हुआ है। **प्रो. खेम सिंह डहेरिया** ने धन्यवाद–ज्ञापन किया और पूरे कार्यक्रम के सभी सत्रों का सफल संचालन **डॉ. आशुतोष सिंह** ने किया।

पण्डित मधुसूदन ओझा स्मृति–संवाद एवं 'वेदान्त' पर राष्ट्रीय परिसंवाद

संस्कृति विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, विद्याश्री न्यास एवं श्री शंकर शिक्षायतन के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 07 नवम्बर 2017 को संस्कृति विद्या धर्म विज्ञान संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी के सभागार में पंडित मधुसूदन ओझा के रचनाकर्म के संदर्भ में 'वेदांत' विषयक राष्ट्रीय परिसंवाद प्रो. चन्द्रमा पाण्डेय की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसके मुख्य अतिथि पं. मधुसूदन की प्रपौत्री डॉ. पद्मलता ठाकुर थीं। बीज वक्तव्य प्रो. सुधाकर मिश्र ने प्रस्तुत किया तथा प्रो. नवल किशोर चौधरी, प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, प्रो. हृदय रंजन शर्मा, प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी एवं प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी ने प्रमुख वक्तव्य दिया।

मुख्य अतिथि **प्रो. पद्मलता ठाकुर** ने पं. मधुसूदन ओझा की पारिवारिक पृष्ठभूमि पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि वे ऐसे अद्भुत व्यक्तित्व के स्वामी थे, जिनके सामने राजे–महराजे भी नतमस्तक रहे और उन्होंने अपने स्वाभिमान, तर्कशीलता एवं अध्ययन से पूरी 20वीं शताब्दी में एक अलग पहचान बनाई। डॉ. ठाकुर ने प्राचीन ज्ञान, संस्कृति एवं भाषा के संस्कार के अभाव पर चिंता व्यक्त करते हुए ओझाजी के वेद–विषयक सिद्धांतों के अनुशीलन पर बल दिया। **प्रो. सुधाकर मिश्र** ने अपने बीज वक्तव्य में वेदान्त की चर्चा करते हुए बताया कि यह 'भेदान्त' है, जिसके शाब्दिक एवं आर्थिक स्वरूप के मनन की आवश्यकता है।

प्रो. नवल किशोर चौधरी ने पं. मधुसूदन ओझा के कृतित्व की चर्चा करते हुए बताया कि ओझाजी ने वैज्ञानिक दृष्टि से वेद के अध्ययन की आधार–शिला रखी, जो आज भी प्रासंगिक है। **प्रो. विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र** ने वेदांत की व्याख्या करते हुए बताया कि यह साधना की विद्या है जो बताती है कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ मुझे जाना है। **प्रो. हृदय रंजन शर्मा** ने बताया कि वेदांत को जानने के लिए दो पद्धतियाँ हैं– भाष्य पद्धति एवं भाषा विज्ञान पद्धति– जिसको दिग–काल से जोड़ते हुए ओझा जी ने आधुनिक व्याख्या प्रस्तुत की है, जो हमारी अक्षुण्ण धरोहर है। आगे बताया कि वेद कहता है कि उसे जानो, स्वयं अमृतमय हो जाओ और सबको अमृतमय बनाओ। **प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी** ने कहा कि पं. ओझा जी ने भारतीय विद्या को पुनर्जीवित किया तथा उनके अक्षर खण्ड में वेदांत का प्रतिपादन किया गया है। **प्रो. वशिष्ठ त्रिपाठी** ने बताया कि हमारे जितने भी दर्शन हैं, वे सभी हमें मोक्ष की ओर ले जाते हैं और वेदांत केवल तत्त्व–ज्ञान तक ही नहीं सीमित है अपितु वह लोकोपयोगी भी है, जिसमें सारे पदार्थ निहित हैं। अपने अध्यक्षीय संबोधन में **प्रो. चंद्रमा पाण्डेय** ने मधुसूदन ओझा को महामनीषी बताते हुए उनको सनातन परम्परा का प्रतीक माना और वेदान्त के शास्त्रीय पक्ष की तुलना में व्यावहारिक पक्ष की उपेक्षा पर चिंता व्यक्त की।

परिसंवाद का शुभारंभ डॉ. रविकान्त त्रिपाठी के मंगलाचरण से हुआ। अतिथियों का स्वागत डॉ. दयानिधि मिश्र ने, धन्यवाद ज्ञापन प्रो. धनंजय कुमार पाण्डेय एवं संचालन अश्विनी कुमार पाण्डेय ने किया। परिचर्चा में प्रो. हरीश्वर दीक्षित, प्रो. पतंजलि मिश्र, प्रो. राजाराम शुक्ल, प्रो. शीतला प्रसाद पाण्डेय, डॉ. सुनील कुमार मानस, अरविन्द चौधरी, डॉ. उदयन मिश्र, डॉ. ध्रुव नारायण पाण्डेय सहित अध्यापक एवं छात्र–छात्राओं की उपस्थिति रही।

पण्डित विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान 'साहित्य एवं संस्कृति'

विद्याश्री न्यास के सांवत्सर आयोजनों की शृंखला में विद्यानिवास मिश्र स्मृति व्याख्यान के अन्तर्गत इस वर्ष नेशनल इण्टर कॉलेज, पिण्डरा, वाराणसी के प्रांगण में विद्यानिवास मिश्र व्याख्यान केन्द्र, श्री शंकर शिक्षायतन एवं विद्याश्री न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में 'साहित्य एवं संस्कृति' विषय पर आयोजित व्याख्यान प्रो. कमलेशदत्त त्रिपाठी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती एवं पं. विद्यानिवास मिश्र के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलन से हुई, साथ ही रुचिता, रिया एवं खुशी ने सरस्वती वंदना एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अकादमिक सत्र की शुरुआत प्रो. रामकीर्ति शुक्ल के व्याख्यान से हुई। शुक्ल जी ने संस्कृति को सामूहिक अवचेतन एवं जातीय स्मृतियों के इतिहास की निर्मिति बताया। उन्होंने बताया कि यह भारतीय संस्कृति की ही विशेषता है कि हम प्रत्येक कार्य को अनुष्ठान की तरह सम्पन्न करते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि हमारी संस्कृति बहुलवादी है, जिसकी एक मुख्य धारा है और उसकी अनेकानेक उपधाराएँ हैं।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. रामदेव शुक्ल ने साहित्य और संस्कृति में व्याप्य–व्यापक संबंध बताते हुए विद्यार्थी जीवन के संदर्भ में 'धैर्य' को सबसे बड़ी सांस्कृतिक विशेषता के रूप में रेखांकित किया। उन्होंने बताया कि हमारे यहाँ 'आचार' विचार से अधिक महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता, उसे महसूस किया जा सकता है। प्रो. अवधेश प्रधान ने प. विद्यानिवास मिश्र के जीवन एवं लेखन को ध्यान में रखते हुए भारतीय संस्कृति के विश्व–व्यापी स्वरूप को स्पष्ट किया। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति सदा जोड़ने पर बल देती रही है तोड़ने पर नहीं।

इस कार्यक्रम के अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने संस्कृति एवं साहित्य में भेद करते हुए कहा कि सरस्वती की प्रतिमा संस्कृति का प्रतीक है और विद्यानिवास मिश्र का बोलना, लिखना साहित्य है। इसी क्रम में आगे बताया कि संस्कृति के संदर्भ में वासुदेव शरण अग्रवाल ने वेद–विवेचन, हजारी प्रसाद द्विवेदी ने 'वेद एवं शास्त्र' विवेचन किया, जबकि विद्यानिवास मिश्र ने आगम, निगम एवं लोक का बहुमुखी विवेचन करते हुए उसकी सतानत परम्परा को स्पष्ट किया है। उन्होंने कहा कि जो समाज अपने देश की विभूतियों को याद करता है, उसकी जीवंतता बनी रहती है।

स्वागत–भाषण महाविद्यालय के प्राचार्य श्री रामाश्रय सिंह ने किया। धन्यवाद ज्ञापन के क्रम में डॉ. दयानिधि मिश्र ने संवाद की भाषा के रूप में संस्कृति की पहचान कराई। कहा कि साधुता, सहजता ही हमारी संस्कृति है। कार्यक्रम का समापन भोजपुरी क्षेत्र की प्रसिद्ध गायिका सुश्री सुचरिता गुप्ता के गायन एवं प्रकाश उदय के काव्यपाठ से हुआ। इस कार्यक्रम का संचालन कृष्णानंद राय ने किया। डॉ. उदयन मिश्र, डॉ. सुनील कुमार मानस, प्रो. उदित नारायण चौबे सहित विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों के प्राचार्यों एवं शिक्षकों सहित हजारों छात्र–छात्राओं की उपस्थिति ने इस आयोजन को और भी गरिमामय बना दिया।